श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

जन्माष्टमीके पावन अवसर पर सुशोभित
सुमन सिंहासनमध्य विराजमान श्री राजश्यामाजीकी नयनरम्य झांकी ।

सितम्बर २०११

वर्ष ८३ श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर अंक ९

www.krishnapranami.org

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित जन्माष्टमीकी सुमनोहर झाँकी

श्री ५ नवतनपुरी धामके नेतृत्त्वमें आयोजित जन्माष्टमीकी विशाल शोभायात्राकी शोभामें अभिवृद्धि करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री, गुजरात राज्यके राज्यमंत्री श्रीमती वसुबहन त्रिवेदी, जामनगर शहरके अग्रगण्य महानुभाव एवं भाविक भक्तजन तथा विविधझाकियां ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि.सं : २०६८ निजानन्दाब्द : ४२९ बुद्धजी शाका : ३३४

वर्ष : ८३ **सितम्बर २०११** अंक : ९

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम– खीजड़ा मन्दिर
जामनगर – ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी लक्ष्मण चैतन्य *एवं* श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/- १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१
फोन : (०२८८) २६७ २८२९ फेक्स (०२८८) २५५ १३५३
E-mail : navtanpuri@gmail.com /navtanpuri@krishnapranami.org
website : www.krishnapranami.org / www.krishnadhamusa.org

पारणीये नन्दकुमार :

नन्दकुमार मारो हैडानो हार, झूले पारणीये नन्दकुमार ।
कंकुवरनी काया सोहे कान कुंवरने, जोईने मोही सर्वे व्रजनी नार ॥

हेते गाय गोपी हरषे झुलावे, धूम मची बाबा नन्दने द्वार ।
घेर घेरथी सहु मानुनी मली, धवल मंगल गाये चार ॥

हरखी गोपी ग्वालनी मंडली, चौक चौक थई थईकार ।
चन्द्र सखीनो वालो रसीयालो, ए छे मारो प्राण आधार ॥

श्री राधा प्राकट्य वधाई :

अनिहारे आज मंगल व्रज मांही, घर घर बाजत आनन्द वधाई ।
वृषभान गोपकी राणी, ता कुख प्रगटी श्री ठकुराणी ॥

सदा सुख दाता धामधनी

जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

धामके धनी पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी सदैव सुख प्रदान करते हैं इसलिए उनको सुखदाता कहा है। वे दयालु हैं, कृपालु हैं, आनन्ददाता हैं। यहाँ पर सुखका तात्पर्य परम सुख अर्थात् आनन्दसे है। शास्त्रोंमें भी इसी प्रकारका उल्लेख है, **आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्** अर्थात् आनन्दको ही ब्रह्म समझो, ब्रह्म आनन्द स्वरूप है।

फिर दुःख क्यों ?

सामान्यजनकी जिज्ञासा होती है कि जब परमात्मा आनन्द दाता हैं तो मनुष्यको दुःख क्यों प्राप्त होते हैं। इसपर मनन करनेपर ज्ञात होता है कि मनुष्य अज्ञानताके कारण गुण अंग इन्द्रियोंके वशीभूत होकर परमात्माकी दी हुई बुद्धिका दुरूपयोग कर हेय (बुरे) कार्य करते हैं और उनके परिणाम स्वरूप दुःख प्राप्त करते हैं। महामति श्री प्राणनाथजी दूसरे स्थानपर भी कहते हैं, **खुदा न देवें दुःख किन को** अर्थात् परमात्मा किसीको भी दुःख नहीं देते हैं किन्तु मनुष्य ही अज्ञानवश अपने कर्मोंका फल भोगते हैं।

कर्मफल भी देश, काल और परिस्थितिके अधीन :

कर्म भी देश, काल और परिस्थितिके अनुरूप श्रेय और हेय फल देता है। कोई दुष्ट व्यक्ति किसी मनुष्य या अन्य प्राणीको व्यर्थमें मार रहा होता है तो ऐसे समयपर सत्य बोलकर उसे मरवाना दोष कहलाता है और झूठ बोलकर उसे बचाना गुण कहलाता है। इसी प्रकार अन्य कर्मोंको भी समझना चाहिए। कर्मका श्रेय और हेय फल प्रदानमें बड़ा ही सूक्ष्म भेद होता है जो सामान्य व्यक्तिकी समझसे बाहर है। श्री कृष्णजीने गीता ४/६में श्रेष्ठकर्मों(कर्म एवं अकर्म)का अन्तर समझनेमें भी कठिनाई बताई है,

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।

इसलिए कर्मके चयनमें विवेक होना अति आवश्यक है। सत्यको सत्य और मिथ्याको मिथ्या(झूठ) समझनेकी क्षमता जब बुद्धिमें विकसित होती है उसीको विवेक कहा गया है। यह क्षमता सदैव सत्यका संग अर्थात् सत्संग करनेसे प्राप्त होती है। श्रीमद्भागवत माहात्म्य (२/७६)में कहा है,

भाग्योदयेन बहुजन्मसमर्जितेन सत्संगमं च लभते पुरुषो यदा वै ।
अज्ञानहेतुकृतमोहमदान्धकारनाशं विधाय हि तदोदयते विवेकः।।

अनेक जन्मोंमें किए गए श्रेय कार्य संचित होकर भाग्यके रूपमें उपस्थित होते हैं। जब मनुष्यके भाग्यका उदय हो जाता है तब वह सत्संगका अवसर प्राप्त करता है। सत्संगसे प्राप्त ज्ञानकेद्वारा उसकी बुद्धिमें स्थित अज्ञान जनित मोह एवं मदरूपी अन्धकार नाश होनेपर विवेकका उदय होता है। विवेकके उदय होनेपर ही बुद्धि सत्यको सत्य एवं मिथ्याको मिथ्या समझने लगेगी। तब मनुष्य देश, काल और परिस्थितिके अनुरूप श्रेष्ठ कर्म करने लगेगा।

श्रेय और हेय कर्मका ज्ञान न होने पर क्या करना चाहिए ?

अब यह जिज्ञासा उत्पन्न होगी कि सभी मनुष्योंके अन्दर श्रेय या हेय कर्मको समझनेकी क्षमता नहीं होती है तो उन्हें कर्तव्यका निर्णय कैसे करना चाहिए ? इसके लिए कहा गया है कि वे सन्त गुरुजनोंका संग करें, उनके उपदेशोंको समझकर, शास्त्र वचन अर्थात् शास्त्रोंपर आधारित सत् साहित्यका अध्ययन मनन कर अपनी बुद्धिको परिमार्जित करें अथवा निरन्तर गुरुजनोंके सम्पर्कमें रहकर उनके मार्गदर्शनमें कार्य करें। समझदार लोगोनें ऐसी परिस्थितिमें किस प्रकार कार्य किया है उस पर विचार कर स्वयं भी तद्अनुरूप चलें। यदि उपर्युक्त कोई भी उपाय सम्भव नहीं हैं फिर भी आप श्रेय एवं हेय(भला–बुरा) कार्यपर निर्णय करना चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें, यदि आपकी श्रद्धा या भक्ति पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीके प्रति दृढ़ है तो आप उनके चरणोंमें प्रार्थना कर उन पर ही निर्णय छोड़ दें और कहें, हे धामधनी ! मेरे लिए जो श्रेष्ठ है उसकी ओर मुझे ले

जायें । हृदयमें कपट भाव न हो और भक्ति प्रधान व्यक्ति हो तो श्री राजजीके चरणोंमें समर्पित होनेपर पूर्णब्रह्म परमात्मा उस व्यक्तिको अवश्यमेव सत् कार्यकी ओर ही प्रेरित करेंगे । बुद्धि प्रधान व्यक्तिको परमात्माकी प्रेरणाका ज्ञान नहीं भी हो सकता है और उससे भूल हो सकती है । इसलिए भक्ति प्रधान व्यक्तिके लिए ही यह उपाय है । बुद्धि प्रधान व्यक्तिको तो सदैव खोज करनी पड़ेगी । सामान्यतया श्रेय और हेय कर्मपर निर्णय करना बड़ा ही जटिल होता है । परमात्माने सभी व्यक्तिको बुद्धि प्रदान की है इसलिए प्रत्येक व्यक्तिको उसका सदुपयोग करना चाहिए और सदैव अच्छे, समझदार एवं विवेकी व्यक्ति या गुरुजनोंके सम्पर्कमें रहना चाहिए । बुद्धिके परिष्कारके लिए ही तो सारे शास्त्र हैं । शास्त्र अध्ययन या साधनासे बुद्धिको शुद्ध कर सकते हैं । शास्त्र अध्ययन, साधना एवं सत्संग तीनों हों तो कहना ही क्या ? ऐसा मनुष्य सदैव सत्कार्यकी ओर ही प्रवृत्त होगा । शुद्ध हृदयवाले भक्तके लिए तो सर्वत्र सरल है क्योंकि उसका सम्पूर्ण दायित्व परमात्मा स्वयं अपने ऊपर ले लेते हैं ।

उपर्युक्त सम्पूर्ण कथनोंसे यह नितराम् स्पष्ट हो जाता है कि परमात्मा सदैव कृपालु होते हैं, वे किसीको भी दुःख नहीं देते हैं । मनुष्य अपनी बुद्धिका सदुपयोग न करनेसे एवं परमात्माके प्रति पूर्णतः समर्पित न होनेसे ही हेय कर्मका आश्रय लेकर दुःख प्राप्त करते हैं । इसीलिए महामति कहते हैं, **सदा सुख दाता धाम धनी** अर्थात् धामधनी श्री राजजी सदैव सुखदाता हैं, दयालु हैं, कृपालु हैं । विचार करेंगे तो ज्ञात होगा कि यथार्थमें धामधनी सदैव सुख ही प्रदान करते हैं, वे कभी भी दुःख नहीं देते हैं ।

मायाके प्रभावके कारण हमें परमात्माके गुणोंका ज्ञान नहीं होता है और हम मायाके गुणोंकी भांति परमात्माके गुणोंका भी मूल्याङ्कन करने बैठते हैं । यथार्थमें यही हमारी सबसे बड़ी भूल है ।

धाम धनीका अनुग्रह :

सर्वप्रथम हमें अपने धनीके अनुग्रहकी ओर ध्यान देना चाहिए

और यह नहीं भूलना चाहिए कि वे अपनी आत्माओंके प्रति सदैव अनुग्रह ही करते हैं । महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं, **ए खेल हुआ मेहेर वास्ते** अर्थात् श्री राजजीने अपनी आत्माओंके प्रति परम अनुग्रह कर अक्षर ब्रह्मके द्वारा इस सृष्टिकी रचना करवायी है । यद्यपि अक्षर ब्रह्मका स्वभाव ही खेल बनानेका है और वे ब्रह्माण्डोंकी सृष्टि, स्थिति और लय करनेवाले हैं तथापि श्री राजजीने उनपर एवं ब्रह्मात्माओंपर परमकृपा कर अक्षरब्रह्मके अन्य खेलोंकी अपेक्षा इस खेलमें कुछ विशेषतायें बनवायी हैं ।

अक्षरब्रह्म पर अनुग्रह इस प्रकार किया कि धामधनी एवं ब्रह्मात्माओंकी लीलायें देखनेकी उनकी अभिलाषाकी पूर्तिके लिए अक्षरब्रह्मको कहा, मैं तुम्हारे खेलके अन्दर ही अर्थात् मायामें ही तुम्हें अपनी लीलाओंके दर्शन करवाऊंगा । इतना सुनते ही अक्षरब्रह्मने अपने खेलमें विशेषतायें बढ़ाई और अपना सम्पूर्ण ध्यान खेलमें ही लगाया । इस प्रकार अक्षरब्रह्मने श्री राजजी एवं ब्रह्मात्माओंकी लीलाओंके एक एक दृश्यको अपने स्मृति पटल पर अंकित किया जिससे इस मायाके अन्दर सम्पन्न हुई ब्राह्मी लीला अखण्ड हो गई । धामधनी एवं ब्रह्मआत्माओंकी लीलाओंके दर्शनके लिए अक्षरब्रह्मको कुछ अधिक कार्य करने नहीं पड़े अपितु अपने ही खेलको उन्होंने ध्यानपूर्वक देखा ।

दूसरी ओर ब्रह्मात्माओं पर उन्होंने इस प्रकार अनुग्रह किया कि अक्षरब्रह्मका खेल देखनेकी उनकी इच्छाको अपने चरणोंमें बैठाए हुए ही पूर्ण किया । इसके लिए ब्रह्मात्माओंको कहीं भी जाना नहीं पड़ा अपितु वे मूलमिलावामें ही अपने धनीके चरणोंमें बैठकर मायाका खेल देखने लगी । यद्यपि परमधाममें मायाके दर्शन सम्भव नहीं है तथापि धामधनीने ऐसी व्यवस्था करवायी कि ब्रह्मात्माओंने अपने धनीके चरणोंमें बैठे बैठे मायाके खेलके दर्शन किए ।

किन्तु यह बहुत बड़ी विडम्बना है कि ब्रह्मात्मायें खेल देखते देखते स्वयंको भूल गई, अपने धनीको भूल गई और अपने धामको भी

भूल गई । यह श्री राजजीका ही सामर्थ्य है कि वे अपनी आत्माओंको अपने ही चरणोंमें बैठाकर खेल दिखा रहे हैं तथापि ब्रह्मात्माओंको खेल देखते हुए ऐसा अनुभव हो रहा है कि वे श्री राजजीसे दूर हैं और उनका सम्बन्ध भी श्री राजजीके साथ कभी नहीं था । इसीलिए महामति कहते हैं,

सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना तेरी जोड ।
जानो सनमन्ध कबूं ना हुतो, ऐसा किया बिछोड ॥

(खिलवत १/६)

हे धामधनी ! आपकी अंगनायें आपके चरणोंमें आपके साथ ही अति निकट बैठी हुई हैं तथापि खेल देखते हुए ऐसा अनुभव कर रही हैं कि वे आपसे बहुत दूर हैं, उन्हें आपका कोई भी ज्ञान नहीं है और आपके साथ उनका किसी भी प्रकारका कोई भी सम्बन्ध नहीं है और कभी था भी नहीं तथापि आप उन पर अनुग्रह कर उन्हें तारतम ज्ञानके द्वारा जगा रहे हैं और प्रेम लक्षणा भक्तिके द्वारा अपने सान्निध्यका अनुभव करवा रहे हैं

महामति धामधनीको सदा सुख दाता क्यों कह रहे हैं और धामधनीने अपनी आत्माओंको मायाका खेल दिखाकर किस प्रकार अनुग्रह किया ? अब इस पर विचार करें । यदि किसी बड़े तालावमें रहनेवाली मछलीको किसीने पानीसे बाहर निकाल कर थोड़े समयके लिए तपी हुई रेतमें रख दिया और थोड़े समय पश्चात् उसे पुनः पानीमें डाल दिया तो पानीमें प्रवेश करनेपर उस मछलीकी स्थिति कैसी बनी होगी ? जब तक वह रेतमें तप रही थी तब तक छटपटा रही थी किन्तु पानीमें प्रवेश करते ही उसे उस पानीसे इतना सुख मिला और उसने पानीमें ऐसी छलांग लगाई जो अभीतक कभी भी नहीं लगाई थी । वह जन्मसे लेकर अभीतक उसी पानीमें थी किन्तु थोड़ी देर बाहर रहकर जब पुनः पानीमें गई तब उसे पानीका असली स्वाद प्राप्त हुआ जो स्वाद उसने अभीतक कभी प्राप्त नहीं किया था । इसी प्रकार ब्रह्मात्मायें भी मायाका खेल देखकर जब श्री राजजीके चरणोंमें जागृत होंगी तब उन्हें श्री राजजीके प्रेमका जो स्वाद प्राप्त

होगा वह उन्होंने अभीतक प्राप्त नहीं किया था । क्या यह श्री राजजीकी कृपा नहीं है ?

इस उदाहरण पर और ध्यान दें । मछलीको पानीका असली स्वाद जाननेके लिए पानीसे बाहर जाना पड़ा किन्तु ब्रह्मात्माओंको मायाका खेल देखनेके लिए परमधामसे एवं श्री राजजीके चरणोंसे दूर जाना नहीं पड़ा । उनको श्री राजजीने अपने चरणोंसे दूर भी नहीं किया और मायाके सुख दुःख भी दिखा दिए । दूसरी बात मछली तो पानीसे बाहर रहकर गरम रेतमें तपती रही, पुनः पानीमें प्रवेश करनेपर ही उसे पानीका असली स्वाद प्राप्त हुआ किन्तु ब्रह्मात्माओंको तो श्री राजजीके चरणोंको छोड़कर परमधामसे बाहर तो जाना नहीं पड़ा साथमें उनको मछलीकी भांति तपना भी नहीं पड़ा । क्योंकि मायाका खेल दिखाते हुए भी श्री राजजी उन्हें तारतम ज्ञान एवं प्रेम लक्षणा भक्ति प्रदान कर सचेत कर रहे हैं । मायाका ज्ञान भी करवा रहे हैं और अपने मूल सम्बन्धकी पहचान भी करवा रहे हैं । इससे आगे बढ़कर उन्होंने प्रेमलक्षणा भक्ति प्रदान की जिससे मायाका खेल देखते हुए भी ब्रह्मात्मायें अपने धनीके सान्निध्यका अनुभव कर सकें अर्थात् हर पल हर घड़ी श्री राजजीके साथ साथ होनेका अनुभव कर सकें। यही तो धामधनी श्री राजजीका है ।

बस, हमें इसी अनुग्रहका अनुभव करना है । यह माया तो देखनेके लिए है भोगनेके लिए नहीं । धामधनी हमें मायाका खेल दिखा रहे हैं किन्तु हम ही अज्ञानी बनकर खेल देखनेकी अपेक्षा मायामें ही डूब रहे हैं। जब तक मायामें डूबे रहेंगे तब तक धामधनीको दोष देते रहेंगे । जब तारतम ज्ञानद्वारा जागृत होकर एवं प्रेमलक्षणा भक्तिद्वारा श्री राजजीके सान्निध्यका अनुभव करते हुए मायाका खेल देखने लगेंगे तब हमें सर्वत्र धामधनीके अनुग्रहके दर्शन होंगे और हम कह सकेंगे कि हमारे धामधनी वास्तवमें दयालु हैं, सुख दाता हैं, आनन्द दाता हैं । तब हम पुकारने लगेंगे,

सदा सुख दाता धामधनी, मैं कहा कहूँ इन बात ।
महामति जुगल स्वरूप पर, अंगना बलि बलि जात ॥

भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम
डॉ. राजेन्द्र प्रसादजीके उद्गार

धर्मशील वीर छत्रसाल

महाराजा छत्रसाल प्रतिमा अनावरण, पन्ना २८ जनवरी १९५१ के अवसर पर

भारतके गौरवपूर्ण इतिहासके निर्माताकी स्मृति मूर्तिरूपमें कायम रखनेके लिए यह आजका समारोह इकट्ठा हुआ है। बुन्देलखण्डके सुप्रसिद्ध वीररत्न महाराजा छत्रसालकी अश्वारोही मूर्तिका अनावरण संस्कार मेरे हाथसे करानेका जो यह मंगल आयोजन किया गया है इसके लिए मैं छत्रसाल स्मारक सिमिति तथा आप सब लोगोंका हृदयसे आभार मानता हूँ। न्याय एवं नीतिके धर्म मार्ग पर चलकर अपनी मातृभूमिको स्वतन्त्र और समृद्ध करनेवाले वीरपुरुषोंको चाहे वे किसी भी धर्मके हों, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हमेशा हर्ष होता है।

भारतके इस भू भाग(बुंदेलखण्ड)में आनेका मेरा पहला अवसर है। श्रद्धेय ठक्कर बापाने डेढ़ वर्ष पहले इस प्रदेशका दौरा किया था। तब अखबारोंमें प्रकाशित उनके अनुभव मैंने पढ़े थे। उन्होंने बुन्देलखण्डके सुन्दर प्राकृतिक दृश्योंके बारेमें बहुत कुछ लिखा था। केशव दास, लाल, पद्माकर जैसे सुप्रसिद्ध कवि आपके प्रदेशमें हुए। महाराजा मधुकर शाह राव, चम्पतराय और महारानी लक्ष्मीबाई ईसी भूमिके अमूल्य रत्न हैं। राजस्थानकी भाँति यह विन्ध्य भूमि भी वीर–प्रसविनी मानी जाती है। मगर दुःख है कि इतिहास लेखकोंका ध्यान इस प्रदेशकी ओर गया ही नहीं अथवा बहुत ही कम गया है।

यह कितने आश्चर्यकी बात है कि महाराजा छत्रसाल जैसे महापुरुषोंके नामका साधारण उल्लेख तक प्रचलित इतिहास ग्रन्थोंमें नहीं मिलता। उनके विषयमें जो भी अल्प जानकारी मिलती है उससे इस महान देशनायकको स्वातन्त्र्यप्रियता, न्याय और ईश्वर भक्तिका हमें खासा परिचय मिल जाता

है। देशके स्वातन्त्र्यकी खातिर महाराजा छत्रसाल अस्सी वर्षकी आयु तक लड़ते रहे। एक बहुत बड़े राष्ट्रका उन्होंने स्थापन और शासन किया। स्वभावतः यह उनके बाहुबल और भारी पराक्रमका फल था। पर जिन सद्गुणोंसे वे महान और चिरस्मरणीय बने वे तो उनके दूसरे ही गुण थे। एक तो उनमें अभिमान नहीं था। सिंहगढ़में जाकर शिवाजीसे नम्रतापूर्वक उन्होंने स्वतन्त्रताका गुरुमन्त्र लिया। वृद्धावस्थामें बाजीराव पेशवासे सहायता माँगी। यह राजपूत है, यह मराठा है। इस तरहकी संकीर्ण भावना उनके विशाल हृदयमें न थी। दूसरे वे सदा अनीति और अत्याचारके ही विरुद्ध लड़े किसी खास जाति या सम्प्रदायके लिए नहीं। छत्रसालकी सेनामें राजपूत, कायस्थ, भार, अहीर, ढीमर और बाटी भी थे। मेहतर भी सेना में रहते थे और मुसलमान मियाँ भी। उनके राज्यमें भी सभी वर्ग और सभी जातियोंके लोग मान पाते थे। छत्रसालने शिवाजीकी तरह मुसलमान स्त्रियोंके साथ बहू–बेटियोंकी तरह व्यवहार किया। तीसरे, किसी भी युद्धमें न तो उन्होंने शत्रुसे विश्वासघात किया न निहत्थों पर हाथ उठाया। युद्धमें तथा राज्य शासनमें छत्रसालने हमेशा न्यायका ही पक्ष लिया। अपने पिता श्री चम्पत रायसे उन्होंने इन वीरोचित गुणोंको उत्तराधिकारमें पाया था।

छत्रसालमें कृतज्ञता भावना भी पूरी थी। बचपनमें घोड़ेकी सवारी करानेवाले महाबलीको राजाधिराज हो जाने पर भी वे भूले न थे। अपने साथी घोड़ेको 'भले भाई' की उपाधि दे रखी थी। छत्रसालकी गुण ग्राहकता तो प्रसिद्ध है महाकवि भूषण छत्रपति साहूके दरबारके आदरको क्यों न छोटा मानते जब कि स्वयं सम्राट छत्रसालने उनकी पालकीका डंडा अपने कंधे पर उठाया था। कविको अनूठी गुण ग्राहकताके आगे झुककर कहना पड़ा,

और राव राजा कोऊ मन में न लाऊँ अब।
साहूको सराहूं, के सराहों छत्रसाल को॥

छत्रसाल स्वयं भी एक उच्च कोटिके कवि थे। 'छत्रसाल ग्रन्थावली'

में उनके उच्च कोटिके भक्ति और राजनीतिसे पूर्ण गीत हैं ।

देखकर आश्चर्य होता है कि घोर संघर्षमय जीवनमें उन्हें इतनी सरस कविता रचनेके लिए कैसे अवकाश मिला होगा ? भारतकी वीर परम्परामें ही ऐसा होना सम्भव है । छत्रसालकी कविताओंको देखकर लगता है कि वे एक धर्मशील व्यक्ति ऊँचे कृष्ण भक्त थे । महाप्रभु स्वामी श्री प्राणनाथजीका उन पर बहुत प्रभाव पड़ा था । उनके दैनिक जीवन, राजनीति और धर्म नीति पर उनकी छाप स्पष्ट थी । यही कारण है कि छत्रसालने अपने बाहुबल पर कभी गर्व नहीं किया वरन् अपने सर्वस्वको प्रभुकृपा और गुरुके आशीर्वादका ही फल माना । वे अपने आपको प्रभुका सेवक छोड़ और कुछ नहीं मानते थे । जब अपने अन्तिम दिनों औरंगजेबने उन्हें मनसबदारका पद देना चाहा तो उन्होंने कहा,

नर की उदारतामें कौन है सुधार ,
मैं तो मनसबदार सरदार ब्रजराज को ।

परहितकी खातिर जो प्राणोंको भी तुच्छ समझता है वह वीरपुरुष भगवानका आश्रय छोड़ किसी औरका आश्रय कैसे ले सकता है ? छत्रसाल अपने आपको प्रजाका स्वामी नहीं सेवक मानते थे । वे बड़े ही लोकप्रिय शासक थे ।

महापुरुषोंकी मूर्ति स्थापनासे ही हमारे कर्तव्योंकी इतिश्री नहीं हो जाती । वीर पूजाका यह एक प्रकार है परन्तु असली वीर पूजा तो वीरोंके जीवनको अपने जीवमें उतार कर ही हम कर सकते हैं । श्रद्धा प्रकट करनेका असली तरीका तो उनके चरण चिह्नोंपर चलना है । अपने जीवनमें उन गुणोंको लेना है जिनसे वे महान बने थे । वे गुण हैं उनका त्याग, तपस्या, जन सेवा, देश सेवा और ईश्वर पर विश्वास तथा श्रद्धा । भगवान हमें बल दें कि हमारा स्वतन्त्र भारतवर्ष अपने महापुरुषोंके जीवनसे उनके ऊँचे गुणोंको अपनाए जिससे कि हम लोग सत्य और प्रेम मार्ग पर चलकर धर्म निरपेक्ष राष्ट्रके योग्य नागरिक ओर सच्चे लोकसेवक बन सकें ।

वीतक यात्रा

एस. एल. चैतन्य-श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

श्रीकृष्णचरणानुरागवर्धक पूतना मोक्ष प्रसंगका आंशिक अवलोकन हमने गतांकमें किया। आईए, आगे लीलाविहारी श्रीकृष्णचन्द्रकी मनमोहक असंख्य लीलासागरमेंसे एकाद् बूंदका आचमन एवं आस्वादन कर जीवनानन्द प्राप्त करनेका सम्यक् प्रयत्न करते हैं।

शकट भञ्जन लीला : नन्दबाबा और मैया यशोदाने विचार किया कि अब कन्हैयाका निष्क्रमण संस्कार करना चाहिए। श्रीकृष्णके निष्क्रमण संस्कारको भी हमारे ऋषि महर्षि एवं संत सज्जनोंने उत्सव कहा है क्योंकि श्रीकृष्णको मध्यमें रखकर किया गया हर क्रिया मनुष्यके लिए उत्सव हो जाता है। जब बालक प्रथम बार करवट बदलता है तब उसे सूर्यदर्शन कराते हैं। सूर्य दिखानेके लिए बालकको प्रथम बार गृहसे बाहर ले जानेवाले संस्कारको ही बहिर्निष्क्रमण संस्कार कहते हैं। श्री कृष्णको करवट बदलते हुए जैसे ही नन्दबाबा, यशोदा मैंया एवं गोपियोंने देखा सभीने उसी समय उत्सव मनानेका निश्चय किया। दिन निश्चित किया श्री कृष्ण प्राकट्यका चतुर्थ नक्षत्र। श्रीकृष्ण रोहिणी नक्षत्रमें प्रकट हुए हैं। अतः चार बार रोहिणी नक्षत्रका मतलब हुआ १०८। नक्षत्र २७ होते हैं इसलिए २७ गुने चार बराबर १०८। अर्थात् श्रीकृष्ण प्राकट्यके १०८ वें दिनमें करवट बदलनेका उत्सव (बहिर्निष्क्रमण संस्कार) धामधूमसे मनाया गया।

गोकुलमें सभीको आमंत्रण किया सभी प्रातःकालसे ही नन्दगृहमें आने लगे। निष्क्रमणसे पूर्व मंगलकलशकी स्थापना की। भूदेवोंके द्वारा भावपूर्वक किये गये मंत्रोच्चारके साथ-साथ यशोदा एवं गोपियोंने मिलकर कन्हैयाको अनेक सुगन्ध संयुक्त जलधार एवं पञ्चगव्योंसे मंगल स्नान कराया। तदूपरान्त मैया यशोदाने कन्हैयाको विविध वस्त्राभूषण पहनाकर

श्रृंगार किया । श्रृंगारोपरान्त मैयाने कन्हैयाको दुग्ध पान कराया । दुग्धपान करते करते कन्हैयाने श्रमित हुए हों इस तरहसे सोनेका अभिनय किया । जैसे ही कन्हैयाकी आँखे बन्द हुईं मैंयाने सोचा अच्छा हुआ लाला सो गया । अब मैं इसको सुलाकर निश्चिन्त होकर आने जाने वालोंका स्वागत सन्मान कर सकती हूँ, ऐसा सोचकर मैंयाने कन्हैयाको पलनेमें सुला दिया । पलनेमें सुलाते सुलाते मैंयाको लगा कि गृह एवं गृहांगनमें लोगोंकी काफी भीड़ एवं सोर सरावा है और दूसरी बात गोपियाँ कन्हैयाको चैनसे सोने नहीं देंगी । कन्हैयाकी नींदमें विघ्नोपस्थित न हो इसके लिए मैंयाने गृहांगनसे किञ्चित दूर विभिन्न प्रकारके गोरससे भरे हुए एक शकट (गाडा)के नीचे पलने लेजाकर उनको सुला दिया ।

नन्दबाबा, मैंया यशोदा तथा गोपियाँ सभी प्रसन्न होकर उत्सवमें भाग ले रहे हैं । गाय, ग्वाल एवं ब्राह्मण सभीको यथायोग्य भोजन प्रसाद वितरण हो रहा है । सभी एक दूसरेको उत्सवकी वधाई दे रहे हैं । अनेक प्रकारके मंगलाचरण, स्तुति, भजन एवं गीतोंके द्वारा नन्दालय गूँज रहा है । अबीर गुलालसे गगनाच्छादित है । इधर शकट नीचे सोये हुए कन्हैयाकी आँखे खूल गई । आखें खुलते ही कन्हैयाने देखा कि उनके सन्निकट कोई नहीं हैं सभी दूर दूर अपनी मस्तीमें खोये हुए हैं । कुछ देर तो कन्हैयाने किसीके आनेकी प्रतीक्षा की किन्तु न गोपी, न ग्वाल, न मैया न बाबा किसीको अपने पास आते न देखकर उन्होंने रुदन प्रारम्भ कर दिया । रोते रोते कन्हैयाकी आँखे लाल हो गई किन्तु अभीतक किसीको आते हुए न देखकर कन्हैयाने विचार किया कि उत्सव मेरे नामपर हो रहा है और मुझे ही विस्मृत करना यह अच्छी बात नहीं है इसलिए सबक सिखाना चाहा, उन्होंने खेल–खेलमें ही अपने कमल दल सदृश पाद पद्मसे शकटके नीचे प्रहार किया । फिर तो क्या था शकट प्रचण्ड ध्वनिके साथ टूटकर बिखर गया । शकटके ऊपर अनेक मटकियाँ थी जिसमें किसीमें दूध, किसीमें दही, किसीमें मख्खन तो किसीमें घी भरकर रखा था वह सारा गोरस बहने लगा । कन्हैयाने सोचा हाँ यह सब मेरे लिए हैं किन्तु नासमझ लोग मेरे ऊपर पदार्थ रखकर मुर्खता करते हैं । कन्हैया गोरसके ऊपर क्रीड़ा करने लगे ।

शकट भंगकी प्रचण्ड ध्वनि सुनते ही गोपियाँ एवं नन्द यशोदाकी स्थिति वैसी ही हो गई जैसे सिंहनाद सुनकर मृगशावककी होती है। सभी यत्र तत्र दौड़ने लगे, सभीके मुंहसे कन्हैया–कन्हैया निकल रहा था। सभीके मानस पर कुछ महिने पूर्व ही घटी घटना ताजी हो गई। यशोदाके अतिरिक्त अन्य किसीको यह जानकारी नहीं थी कि कन्हैयाको शकट नीचे सुलाया है। यशोदा सीधे शकट निकट पहुँच गई। गोपियाँ भी यशोदानुगामी बनकर वहाँ पहुँची। वहाँका दृश्य देखकर यशोदाके साथ–साथ अन्य गोपियाँ भी विस्मित हो गयीं। क्योंकि वहाँ न तो शकट था, न शकटके नीचे कन्हैया किन्तु वहाँ शकटके कई टुकड़े बिखरे पड़े थे। कन्हैयाको गोरसमें निमग्न देखकर सभीकी आखें खुलीकी खुली रह गई। एक गोपीने कन्हैयाको गोरससे उठाकर शीघ्र ही यशोदाकी आँचलमें डाल दिया। कन्हैयाको सकुशल पाकर यशोदा एवं गोपियोंमें जान आ गई। कन्हैयाके मस्तक सुंघते हुए सभीने अपने इष्टका धन्यवाद किया। सभीने कहा यह शकट कैसे टूटा ? नन्हें मुन्हें ग्वाल बालोंने जो वहीं पर क्रीड़ा कर रहे थे कहा : कन्हैयाके चरण प्रहार होनेसे। बालकोंकी बात किसीने नहीं मानी : कहा अरे नटखटों ! यह अविश्वसनीय बात क्यों करते हो ? कहां पद्मदलकी तरह कन्हैयाके कोमल चरण और कहाँ यह शकट। सम्भव है तुम लोगोंका ही उपद्रव हो। चलो कोई बात नहीं, भगवानने अनहोनीसे बचाया।

क्या है शकट भञ्जन ? शकट है गाड़ा, गाड़ी। शकट है मनुष्य जीवन। जीवनको सही ढंगसे चलानेके लिए पदार्थके साथ–साथ प्रेमकी भी जरूरत होती है। जीवनरूपी गाडीका एक पहिया भी यदि अयोग्य हो तो वह नहीं चलेगी। जिसके जीवनमें मात्र पदार्थकी अहमियत है उसकी जीवनरूपी गाड़ी सही ढंगसे नहीं चल सकती। ज्ञानीजन कहते हैं, जैसे मोटर कारमें चार पहिये होतें हैं इसीतरह मनुष्य जीवनमें भी चार पहिये होते हैं वे हैं धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। इन चार पुरुषार्थरूपी पहियेमेंसे अधिकांश मनुष्य केवल अर्थ एवं कामको ही सर्वस्व समझते हैं इसीलिए उनकी जीवन गाडी सही ढंगसे नहीं चल पाती।

श्री कृष्णने देखा कि मुझे जिस गाड़ीके निचे रखा है वह मात्र अर्थ एवं कामयुक्त दिखाई देता है। अतः धर्म और मोक्ष बिनाके मात्र अर्थ एवं काम मुझे स्वीकार्य नहीं हैं। दूसरा इस गाड़ीमें रखे पदार्थ (गोरस) मेरे लिए होने चाहिए। अर्थात् मैं रसस्वरूप, रसराज, रससागर परमात्माके ऊपर सांसारिक पदार्थ कुछ नहीं होना चाहिए। अर्थात् प्रेम प्रमुख है पदार्थ गौण। परमात्मासे पदार्थ है न कि पदार्थसे परमात्मा। कन्हैयाने सोचा दृश्यादृश्य यावत् पदार्थ सभी मेरेसे हैं, मैं इन पदार्थसे नहीं हूँ। अतः मैं इन पदार्थके नीचे कैसे हो सकता हूँ। पदार्थ माया हैं प्रेम बह्म। यहाँ पर प्रेमस्वरूप कृष्ण स्वयं ब्रह्म हैं और पदार्थरूपी गोरस माया। संतों कहते हैं ब्रह्मसे निर्मित माया है अतः मायाका स्थान ब्रह्मसे नीचे होना चाहिए। यशोदाने गोरसको ऊपर रखा और गोविन्दको निचे अर्थात् यशोदाने मायाको अधिक महत्त्व दिया। यह कन्हैयाको अच्छा नहीं लगा इसीलिए उन्होंने गाडी तोड़कर पदार्थोंको नीचे गिराया एवं उसके ऊपर स्वयं क्रीड़ा करके सभीको बताया कि मैं सर्वदा पदार्थसे ऊपर हूँ।

यह भी संभव है, गाड़ा गोरससे युक्त था। गाड़ामें गोरस रखनेका अर्थ है गोरसको गोकुलसे अन्यत्र ले जानेकी तैयारी। कन्हैयाने ध्यानसे देखा यह गोरस मथुरा ले जाया जा रह है। वह भी क्रुर कंसके दरबारमें। यह बात तो कन्हैयाको बिलकुल ही नहीं जचीं। उन्होंने सोचा गोरस गोकुलका धन है इसको आततायी कंस, जो अत्याचर, दुराचार, पापाचार एवं भ्रष्टाचार जैसे असंख्य अवगुणोंसे युक्त है, को उसे सौंपना उचित नहीं है। यह गोरस गोकुलका धन है अतः इसका उपयोग भी गोकुलमें ही होना चाहिए। ऐसा सोचर कन्हैयाने मनमें विचार किया कि गोरस कंसको देनेसे श्रेष्ठ है गोकुलकी पावन धरतीपर अभिषेक करना। उन्होंने शकट तोड़कर गोरसको वहीं पर गिरा दिया।

शकट भंञ्जनका अन्य कई रहस्य हैं, कन्हैयाने सोचा उत्सव मेरे नाम पर हो रहा है। सभी मेरे नाम पर एकत्र हुए हैं किन्तु सभी मुझे ही भूल कर दूसरे कार्यमें निमग्न हो गए हैं यह अच्छी बात नहीं है। श्रीकृष्ण कहते

हैं, जो कुछ करो, जो कुछ बोलो, जो कुछ दान, ध्यान, पुण्य तपस्यादि करो मुझे केन्द्रमें रखकर करो, यावद् कर्म मुझे अर्पण करो तब यह कर्म सन्यास होगा। **श्रीकृष्णार्पणमस्तु** करनेसे कर्ताके भीतर अहंकारका प्रादुर्भाव नहीं होगा। अहं बड़ी भारी खाई है अतः जो भक्त समग्र कर्मको परमात्माके चरणोंमें समर्पित करता है उसका कभी विनाश नहीं होता है **'न मे भक्त प्रणश्यति'**। उत्सवके नाम पर केवल बाह्याचार अथवा दिखावा ही होगा तो उससे कोई वास्तविक लाभ नहीं होगा। उत्सव आत्मरञ्जनात्मक होना चाहिए। मात्र मनोरञ्जनात्मक उत्सव आत्मोन्नतिके लिए बाधक सिद्ध होगा। कन्हैयाने सोचा, न तो मैंयाको ही मेरा ख्याल है न ही गोपियोंको। उनके मनमें अभी मेरे प्रति भाव न्यून एवं पूजोपचारके प्रति अधिक दिख रहा है अतः यह कल्याणप्रद नहीं है। प्रेमके स्थान पर मात्र बाह्याचार होगा तो वह कर्मकाण्ड बन जाएगा। मात्र कर्मकाण्ड मुझे प्राप्त करनेमें असमर्थ है। कर्मकाण्ड प्रेमपूर्वक हो यह बात योग्य है किन्तु प्रेममें कर्मकाण्डका मिश्रण यह अयोग्य है। प्रेम सर्वोपरि है अतः उसमें दिखावेका कोई स्थान नहीं है। कन्हैयाने सोचा मेरे भक्त वास्तविकतासे विचलित होकर सच्चा मार्गसे स्खलित हो जाय यह अच्छी बात नहीं है। ऐसी स्थितिमें इन्हें संवारना भी मेरा ही कर्तव्य होगा–इसीलिए उन्होंने वास्तविकतासे विचलित होते हुए भक्तोंका ध्यानाकर्षण अपनी ओर करवानेके लिए ही शकट भंगका एक बहाना किया।

पुराणोंमें शकटासुर वधका भी प्रसंग पाया जाता है। कई संतजन एवं विद्वद्जन शकटासुर वधको अन्य कल्पकी कथा मानते हैं। यह प्रसंग इस प्रकार है, पूतना वधके बाद कंसने अपने मंत्रियोंके साथ मंत्रणा कर एक मायावी असुरको तैयार किया जो गोकुलमें जाकर कन्हैयाको मार डाले। वह असुर अदृश्य रूप धारण कर शकटमें जाकर बैठ गया। अदृश्य रूपमें शकट–सा रूप धारण करनेके कारण ही उसका नाम शकटासुर पड़ा था। उसको देखकर कन्हैया समझ गये कि यह भी कंस द्वारा प्रेषित है। चलो इसका भी काम तमाम कर देते हैं। कन्हैयाने अपने नन्हें नन्हें चरणोंको

बालक्रीड़ा पूर्वक शकटमें प्रहार किया। चरण प्रहारसे ही शकट तो चूर चूर होकर गिर गया उसके साथ–साथ असुर भी मारा गया। पुराणोंमें कथा आती है कि हिरण्याक्ष पुत्र उत्कचको उसके उद्दण्डताके लिए लोमश ऋषिने असुर होनेका श्राप एवं श्रीकृष्णके चरण स्पर्श द्वारा मुक्ति होनेका वरदान दिया था। उसी अनुरूप वह असुर शकटमें आकर बैठा था उसे श्रीकृष्ण चरणस्पर्श होते ही मुक्ति मिल गई। उसने दिव्य शरीर धारण किया एवं श्रीकृष्णको वन्दन एवं प्रणाम कर अपने लोकको प्रस्थान किया।

तृणावर्तकी कथा : एक दिन मैंया कन्हैयाको दुग्धपान करा रही थी कन्हैयाने सोचा कि आज कंस द्वारा प्रेषित एक और असुर आनेवाला है। अतः मैं जब तक मैंयाकी गोदमें रहूँगा तब तक वह असुरके साथ मेरा मिलना असंभव है। कन्हैयाने अपना वजन बढ़ाना प्रारंभ किया। क्षण भरमें ही मैंयाको लगा कि क्या बात है आज कन्हैया क्यों **'गिरिकूटवत्'** अर्थात् पहाड एवं चट्टानकी तरह भारी लग रहा है–भोली मैंया सोचने लगी कि मेरी गोदमें स्याम है कि कोई शीला ? शीघ्र एक वस्त्र बिछाकर कन्हैयाको उसमें सुला दिया एवं स्वयं घरकाममें लग गई।

इतनेमें कंस प्रेषित तृणावर्त पहुँचा चक्रवात तथा बवंडरका रूप लेकर। **'मुहूर्तमभवद् गोष्ठं रजसा तमसाऽऽवृतम्'** एक ही मुहुर्तमें उस चक्रवातने पूरा गोकुलको अपने चपेटमें ले लिया। समग्र गोकुल अन्धकारमय हो गया। उसने ऐसी आँधी चलाई कि समूचा गोकुल धूल ही धूलसे आच्छादित हुआ। वृक्ष, पेड़ पौधे, गायके गोठादिको वह असुर तहस–नहस करनेका प्रयत्न करने लगा तब कन्हैयाने सोचा मेरे रहते हुए तुम यह काम नहीं कर सकते। इसीलिए आओ पहले मेरे साथ हाथ चार करलो। वह कन्हैयाके पास पहुँचा और कन्हैयाको उठाकर वह आकाशमें ले गया। कुछ देर तो कन्हैयाने उसके साथ क्रीडा की किन्तु वह जैसे ही गोकुलसे बाहर जाने लगा–कन्हैयाने कहा भाई यहीं तक ठीक है, गोकुलसे बाहर मैं अभी नहीं जाऊंगा। कन्हैयाने अपना वजन और बढ़ाया असुरको लगने लगा कि मैं बड़ा भारी चट्टानको उठा रहा हूँ या एक बालकको ? कन्हैयाने कहा **'अन्ते या मतिः सा गतिः'** तूंने अन्तिम अवस्थामें चट्टानको याद किया तो

तेरी मृत्यु भी चट्टानके संसर्गसे ही होगी। कन्हैयाने अपना वजन इतना बढाया कि वह असुरकी शक्ति ढिली पड़ने लगी। धीरे धीरे चक्रवातरूप असुर गगनसे नीचे उतरने लगा। कन्हैयाने एक भारी शिला(चट्टान)में पटककर उसका उद्धार कर दिया।

इस प्रसंगका तात्पर्य बताते हुए संतजन कहते हैं गोकुल **रजसातमसावृत्तं** हो गया क्योंकि वह असुर चक्रवातका रूप लेकर आया था। रजका अर्थ है रजोगुण एवं तमका अर्थ है तमोगुण। रजोगुणसे काम, क्रोध एवं लोभादि गुण एवं तमोगुणसे आलस्य, निद्रा एवं प्रमादादि गुण प्रकट होते हैं। चक्रवातके कारण गोकुलवासियोंको कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा थ। चारों ओर घनघोर अंधेरा छा रहा था। गोकुल अर्थात् इन्द्रियोंका समूह, हमारे इन्द्रियोंमें काम क्रोध, लोभादि रजस एवं आलस्य, निद्रा एवं प्रमादादि तमसने प्रवेश किया तो जीवन अन्धकारमय होगा। उसका जीवन चारों ओरसे दुःख एवं दर्द भरा होगा।

श्रीकृष्ण तृणावर्तका नाश करके यह उपदेश देते हैं कि हे सज्जनों तुम अपने अनमोल जीवनको सुगन्धित सुमन बनाना चाहते हों तो अपनी इन्द्रियोंको रजोगुण एवं तमोगुणके प्रभावसे सर्वथा मुक्त रखो। सत्वगुण सम्पन्न जीवन ही पुनीत होकर नवनीत समान बनेगा जो कन्हैयाको अतिशय प्रिय है।

कन्हैयाकी दिव्य लीला तन, मन एवं जीवनको आनन्द प्रदान करने वाली है। कन्हैयाके चरणोंमें प्रेमानुराग बढ़ाने वाली ऐसी असंख्य लीलायें हैं। जिनमेंसे एकाद् लीलाका भी हम आस्वादन करेंगे तो जीवन अवश्यमेव सफल हो जायेगा। श्री कृष्ण लीलाके विषयमें निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके द्वारा तारतम महामंत्र ग्रहण करनेका सद्भाग्य एवं महामति स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराजको दो वर्ष पर्यन्त अपने गृह मन्दिरमें रखकर सेवा करनेका गौरव जिन्होंने प्राप्त किया ऐसे (जयरामभाई) श्री करुणासखीने श्री तारतम सागर वीतकमें कहा है,

धन्य धन्य सकल व्रजवासी, जित पूर्णब्रह्म लीला प्रकासी।
पराक्रम पियाके केते कहिए, वर्णन करते पार न पाईए॥

श्री महामति श्री प्राणनाथजीका अध्यात्म दर्शन

गोविन्द प्रसाद चतुर्वेदी, भिवानी (हरियाणा)

प्राकट्य एवं गुरुदीक्षा

गुजरात प्रान्तके सुप्रसिद्ध नगर जामनगर राज्यके तत्कालीन मन्त्री श्री केशवराय ठाकुर तथा माता धनबाईके पुत्रके रूपमें वि.सं. १६७५(ईस्वी सन् १६१८) आश्विन कृष्णा चतुर्दशी रविवारके दिन प्रातः ९ बजे जन्मे महामति श्री प्राणनाथजीका बाल्यावस्थाका नाम मेहेराज(मिहिरराज) था । प्रखर प्रतिभाके धनी धर्मनिष्ठ श्री मेहेराजकी शिक्षा उनके पिताकी पद स्थितिकी गरिमाके अनुरूप राजकीय सम्मानके साथ हुई । श्री मेहेराज बचपनसे ही आत्मचिन्तनमें निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराजके सत्संग-प्रवचनोंसे श्री केशव राय ठाकुरके परिवारजनों सहित बड़ी संख्यामें नगरवासी प्रभावित थे । श्री मेहेराजजीको बारह वर्ष दो माह दस दिनकी अल्पायुमें श्री देवचन्द्रजी महाराजके दर्शन तथा सत्संगका लाभ प्राप्त हुआ । बालक श्री मेहेराजको जामनगरमें श्री देवचन्द्रजी महाराज द्वारा स्थापित श्री ५ नवतनपुरी धाममें श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-निजानन्द सम्प्रदायकी आचार्यपीठमें निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजसे गुरुदीक्षा अर्थात् तारतम महामन्त्र प्राप्त हुआ । श्री देवचन्द्रजी महाराजने श्री मेहेराजमें अक्षरातीत ब्रह्म श्री राजजीके आवेशयुक्त परमधामकी इन्द्रावती सखीकी वासनाको परखा और उन्हें निजनाम प्रदान करते हुए अखण्ड परमधामकी ब्रह्मात्माओंकी जागनीसे सम्बन्धित आध्यात्मिक अपूर्व ज्ञान सम्पदाकी गूढ़ातिगूढ़ चर्चा सुनाई । उन्होंने यह निश्चय किया कि श्री मेहेराज ही मेरा अवशिष्ट धर्मकार्य एवं जागनी पूर्ण करनेमें सक्षम होंगे ऐसा परम आत्मसंतोष होने पर स्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराज धर्मका सम्पूर्ण भार श्री मेहेराजके हाथों सौंपकर वि.सं. १७१२ भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशीके दिन स्वयं भी

आत्मारूपसे उनमें समाविष्ट हो गये । सद्‌गुरुने उन्हें मेहेराजसे महामति बनाया इसलिए श्री देवचनद्रजी महाराजके अन्तर्धान पश्चात् सुन्दरसाथ उन्हें महामति प्राणनाथ कहलाने लगे । सद्‌गुरुकी आज्ञाको ही जीवन लक्ष्य समझकर **'सुख शीतल करूं संसार' एवं 'दुनियाँ देऊं रे जगाय'** का अलख जगाते हुए जागनीके लिए देश देशान्तर परिभ्रमण करने वाले श्री मेहेराज ही दिव्य परात्पर परब्रह्मकी ज्ञानज्योतिसे अभिसिंचित होकर महामति श्री प्राणनाथजीके नामसे प्रसिद्ध हुए ।

श्री महामति प्राणनाथजी द्वारा प्रवर्तित आध्यात्मिक दर्शन

वेदो–श्रुतियों, गीता, भागवत, उपनिषदों सहित समस्त भारतीय धर्म शास्त्रोंमें दिव्य परात्पर परब्रह्मके बारेमें एक स्वरसे वर्णन **एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मके** रूपमें किया गया है । ब्रह्मका क्षर, अक्षर एवं अक्षरातीत स्वरूप माना गया है । क्षरस्वरूप परिवर्तनशील है जिसे क्षरपुरुष, आदिनारायण आदि कहते हैं । जो इस ब्रह्माण्डके अधिष्ठाता हैं । ऐसे अनन्त ब्रह्माण्ड़ोका सर्जन करनेवाला ब्रह्मका दूसरा अविनाशी स्वरूप अक्षर ब्रह्म कहलाता है जो स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माका सदंग है । अक्षरातीत स्वरूप पूर्णब्रह्म परमात्माका मूल स्वरूप है उसको ही उत्तम पुरुष, परम ब्रह्म, परम सत्य कहा गया है । वही श्री कृष्णजीका अपना मूल स्वरूप है । असंख्य ब्रह्माण्डोंके राजाके भी राजा होनेसे श्रीकृष्ण प्रणामी धर्ममें उनको श्रीराज कहा गया है । संसारके सभी धर्मों और मत–सम्प्रदायोंका भी यही मत है जो उनके अपने शब्दोंमें वर्णन किया गया है । सभीका लक्ष्य भी एक समान परमात्मा हैं इसलिये **वसुधैन कुटम्बकम्** की धार्मिक एकता और साम्प्रदायिक सहिष्णुताकी भावना तथा एकश्वरवादके सिद्धान्तको उन्होंने प्रसारित किया । यह विशिष्ट आध्यात्म ज्ञान देते हुए महामति श्री प्राणनाथजीने समस्त संसार तथा भारतके समस्त अध्यात्मशास्त्री संतों मनीषियोंको समझाया कि समता और न्यायके मूल्योंकी स्थापना केवल एकेश्वरवादके सिद्धान्तको मानकर ही की जा सकती है । उन्होंने कहा कि सकाम कर्मके बाहरी आडम्बरसे परिवेष्टित(भरे) होने पर मनुष्यमें सर्वाद अंहभाव ही पैदा होगा जिससे वह धर्मके मूल उद्देश्य जीवनका अभ्युदय और आत्माकी निश्रेयस सिद्धि(मोक्ष)को समझ नहीं पायेगा । अतः आपसी

मत–मतान्तरके मतभेदोंमें न पड़कर परमसत्य परमपिता परमेश्वरके अन्वेषणमें सब एक साथ अग्रसर हों ।

महामति श्री प्राणनाथजीने संसारको श्री कृष्णकी परमधामकी दिव्य लीलाओंका अपने प्रवचनोंके माध्यमसे ज्ञान देकर मोक्षके लिए परात्पर पूर्णब्रह्म श्री कृष्णके प्रति प्रेमलक्षणा भक्तिका सरल, सहज, सुन्दर और सर्वोत्तम मनुष्योंके हितके लिये बताया । उन्होंने कहा कि अनन्य भावसे अद्वैत परमपुरुष परमात्माकी भक्ति ही सांसारिक दुखों(भव बाधा)से मुक्त करनेमें सक्षम है इसलिये संसारके प्रपंचोमें पड़ी ब्रह्मात्माओंसे उन्होंने कहा,

मेरे दिल की देखियो, दरद न कछु इसक ।
न सेवा ना बन्दगी, ऐसी मेरी बीतक ।।

(किरन्तन ८२/३)

इस प्रकार प्रेम, सेवा और भक्तिके भावसे रहित तथा परमात्माके प्रति अनन्य समर्पित भक्तिके बिना उसे कैसे पाया जा सकता है । कहा है,

ए तो गति है अटपटी, चटपट लखे न कोय ।
जो मन की खटपट मिटे, तो झटपट दर्शन होय ।।

महामति श्री प्राणनाथजीने सेवा, श्रद्धा और प्रेमसे युक्त जिस महान श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आध्यात्मिक दर्शनका प्रतिपादन लोक कल्याणके लिये किया है उसमें प्रणाम रूपी विनम्रता और मनुष्य जीवनको पार लगानेके लिये परमपिता परमेश्वरके प्रति अटूट श्रद्धा और सभी ब्रह्मात्माओंके प्रति प्रेम तथा सेवाके भाव तुम सेवासे पाओगे पारका जीवन दर्शन दिया है ।

महामति श्री प्राणनाथजीने समस्त भौतिक सृष्टिके नाशवान(क्षर) स्वरूपसे माया–मोह त्याग कर अक्षर ब्रह्मके शिव, नारायण, ब्रह्मा आदि स्वरूपोंके अधिपति नियंता परम सत्य पूर्णब्रह्म परमात्मा अनादि अक्षरातीत श्री कृष्णकी भक्तिका उपदेश देते हुए इसे शब्द ज्ञानसे भी परे प्रत्यक्ष आत्मानुभूतिका विषय बताया है यही निजानन्द तत्त्व दर्शन है । उन्होंने पुरुषोत्तम पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्णकी त्रिधा लीला(तीन प्रकारकी लीला)

क्षर, अक्षर एवं अक्षरातीतकी लीलाकी विवेचना करते हुए कर्म, उपासना, आत्मज्ञान एवं अनुभवके तात्विक महत्त्वको दर्शाकर सृष्टि, जीव, लोक, स्वर्ग, नरक, आकाश(ब्रह्माण्ड) पाताल तथा पांच महाभूत पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सहित मानसी तत्व मन, बुद्धि अंहकार एवं पांच कर्मेन्द्रिय, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच तन्मात्राओं और आत्माके हिन्दू धर्ममें निर्दिष्ट तत्व दर्शनको व्यापक रूपसे बताकर सद्गुरुके माध्यमसे आत्म तत्त्वका ज्ञान प्राप्त करके आत्म साधना करते हुए दिव्य परमधाममें विराजमान पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रति माधुर्य भक्ति स्वरूप प्रेम लक्षणा भक्तिको अपनानेका उपदेश दिया । उन्होंने कहा कि संसारमें शारीरिक व मानसिक क्षणिक सुखसे भी आगे जो परमसुख(अखण्ड सुख–जिसका कभी अन्त नहीं होता) तथा सभी लोकों(पृथ्वी, आकाश, पाताल इत्यादि)से परे अक्षरातीत परब्रह्म पुरुषोत्तम श्री कृष्णके परमधाम(मोक्ष)को पानेका केवल एक ही मार्ग है जो संकीर्ण विचार युक्त तर्क बुद्धि और अमानवीय म्लेच्छ कर्मको त्यागकर संसारमें दया, सेवा तथा सत्कर्म करते हुए जीवोद्धारके लिये भक्तिके तारतम भावको ग्रहण कर प्रेमलक्षणा भक्तिमें लीन हो जाना । इसी तारतम भावका सार है तारतम मन्त्र जिसे अक्षरब्रह्म ब्रह्म, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शेष सहित सभी परमधाम नित्यगोलोककी इच्छा रखनेवाले जीव निरन्तर जपते हुए उस पूर्णब्रह्म परमात्म श्री कृष्णको भजते हैं। महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं,

चोकस कर चित्त दीजिये, आतम को एह धन ।
निमख एक ना छोडिये, कर मनसा वाचा करमन ।।

समस्त चेतनाओंके केन्द्रबिन्दु विश्व ब्रह्मांडके स्वामी एकमात्र राजा परमात्मा श्री कृष्णजी ही श्री कृष्ण प्रणामी धर्ममें श्री राजजीके नामसे पुकारे जाते हैं । इन्हीं पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्णजीका नाम (निजनाम) मनुष्यको संसार सागरसे पार लगाने वाला(तारतम) मन्त्र है। महामति श्री प्राणनाथजीने सांसारिक माया–मोहमें फसी परमधामकी दिव्यआत्माओं(सात्विक मनुष्यों)को लौकिक(व्यावहारिक) तथा पारलौकिक (अध्यात्मिक)रूपसे जागृत करने और प्रेम लक्षणा भक्तिसे भगवान सत्य सनातन सुन्दर श्री कृष्णजीकी भक्तिद्वारा परमानन्द रसकी अनुभूति करनेके लिये प्रेरित किया क्योंकि वास्तवमें

परमधामके सुखोंका स्मरण होना ही हमारी जागनी है। इस संसारमें प्रचलित पुण्य और पापका तात्पर्य है दूसरोंका भला करना सबसे बड़ा पुण्य और दूसरोंके लिये आपत्ति, विपत्ति पैदा करना पाप है। अतः मनुष्यको सदैव नीति, नियम, संयमका पालन करते हुए सत्कर्मके लिये प्रवृत्त रहना चाहिये तथा सत्य, सेवा, समानता, न्याय, अध्ययन, चिन्तन, मनन, समस्त प्राणियोंका हित चिन्तन व आत्मरक्षा एवं दूसरों की रक्षा करना, सांसारिक मूलभूत आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये धन कमाना चाहिये। यही मानवीय शरीरके संवेदी धर्म कर्म हैं इस श्रेय धर्म(तत्त्वचिंतन) तथा भक्तिसे इतर (अलग) प्रेय धर्म कहलाता है। धर्म नित्यास्तु ये के चिन्नते सीदन्ति कर्हिचित अर्थात् जो नित्यप्रति धर्म करनेवाले हैं उन्हें कभी दुख नहीं होता।

महामति प्राणनाथजीके आध्यात्मिक दर्शनके मुख्य तत्व बिन्दू इस प्रकार हैं,

(१) मैं कौन हूँ अर्थात् आत्मतत्वका ज्ञान। (२) कहाँसे आया हूँ ? अपनी इस चराचर जगतमें उत्पत्तिके रहस्यका ज्ञान। (३) क्यों आया हूँ ? अपने जन्मके कर्तव्य अकर्तव्यको जानकर धर्म मार्गका अनुसरण। (४) ब्रह्म और मायाका भेद जानकर जगत्की क्षर–अक्षर (उत्पत्ति, स्थिति, विनाश तथा स्थायित्व) का ज्ञान प्राप्त करके अक्षरातीत परमब्रह्म परमात्माकी खोज। (५) सभी धर्मका मूल तत्व एक है परमेश्वर, इसलिये एकेश्वरवादी एक विश्वधर्मकी स्थापना, सर्वधर्म समन्वयकी नीति और वसुधैव कुटम्बकम्की भावनाका विस्तार। (६) जाति भेद, सम्प्रदाय भेद, ऊँच–नीच भेद, गरीब अमीर भेद, भाषा भेद मिटाकर एकात्म मानववादकी स्थापना तथा भारतमें एक राष्ट्रभाषा हिन्दुस्थानी(हिन्दी)की राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता। (७) समस्त विश्वको एकताके सूत्रमें बांधकर विश्वशान्तिकी स्थापना। (८) मानवतामें सत्य, सेवा, त्याग, करुणा, सहानुभूति, सद्भावना, मानव मात्रमें पारस्परिक प्रेम, दया, दान, अध्यात्म चिन्तन व ज्ञान प्राप्ति आदि सद्गुणोंका विकार करना, धर्म जागरणके लिये जागनी कार्यमें प्रवृत्ति। (९) शरीर शुद्धिके साथ आत्म शुद्धि और तारतम ज्ञानके प्रति जिज्ञासाका भाव जाग्रत करना एवं बाहरी मिथ्या

आडम्बरोंका परित्याग करनेकी प्रेरणा।(१०) परब्रह्म परमात्मा पुरुषोत्तम श्री कृष्णकी प्रेमलक्षणा भक्ति, व्रज लीला, रास लीला तथा जागनी लीलासे संसारको अवगत कराकर इसके लिये प्रेरणा।(११) दुष्ट बुद्धि, नास्तिकता, साम्प्रदायिक व धर्मभेदकी संकीर्णताको नष्ट करनेकी मानवतामें चेतना जागृत कर शुद्ध बुद्धिसे श्री कृष्ण प्रणामी धर्म तथा निजानन्द सम्प्रदायके सात्विक तात्विक सिद्धान्तोंका प्रचार ।

श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सव

धर्मप्रेमी सुन्दरसाथजीको विदित ही है कि श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धाममें प्रतिवर्ष श्री प्राणनाथ प्राकट्य महोत्सव धूमधामसे मनाया जाता है। **प्रतिवर्षानुरूप इस वर्ष भी यह महोत्सव दिनांक २६ सितम्बर २०११ से १ अक्तूबर २०११ पर्यन्त भव्य रूपसे मनाया जायेगा।**

इस पावन अवसर पर **श्री तारतमसागरके १०८ पञ्चदिवसीय पारायणका सुन्दर आयोजन है।** इसके साथ–साथ श्रीतारतम सागर (वाणी) चरचा, भजन, कीर्तन एवं रास गरबा जैसे विभिन्न कार्यक्रमोंका भी भव्य आयोजन है।

सभी सुन्दरसाथजीको इस पावन महोत्सवमें उपस्थित होकर पाठ–पारायण, श्री राजजीके दर्शन, पूजन, भजन, एवं कीर्तन आदिका लाभ लेकर जीवनको धन्य बनानेके लिए सादर आमन्त्रण करते हैं।

: प्रमुख कार्यक्रम :

- **प्राकट्य आरती तथा ध्वजारोहण :** दिनांक २६/०९/१०११ प्रातः १० बजे
- **शोभायात्रा :** दिनांक २६/०९/१०११अपराह्ण ४ बजे
- **पारायण शुभारम्भ :** दिनांक २७/०९/१०११प्रातः ८ बजे
- **पारायण पूर्णाहुति :** दिनांक ०१/१०/१०११प्रातः ८ बजे
- **छठ्ठी महोत्सव :** दिनांक ०१/१०/१०११ प्रातः ९.३०बजे

जहाँ राजश्यामाजी सखियोंके संग

तर्ज : जहाँ डाल डाल पर....

जहाँ राजश्यामाजी सखियोंके संग, करते हैं नित्य बसेरा ।
वो है नवतनपुरी हमारा -२

जहां सतगुरुजीने सबसे पहले, डाला अपना डेरा ।
वह है नवतनपुरी हमारा - २
ए है पावन धरती देवचन्द्रजी, जहा पर तारतम आया ।
जहाँ श्यामा रानीने सतगुरु बनके, श्यामके दर्शन पाया - २
जहाँ निजघरकी बातें सुनकर, सबने जीवन संवारा ।
वह है नवतनपुरी हमारा -२
जहाँ प्राणनाथजी प्रगट हुए है, साथको निजघर दिखाने ।
यही उतरी है पहले तारतम वाणी, जीवोंको मुक्ति देने -२
दर्शनसे ही छूट जाते है, भाव तेरा और मेरा ।
वह है नवतनपुरी हमारा -२
जहाँ कलकल करती निशदिन बहती, जमुनाजी की धारा ।
यहीं खीजडा वृक्ष की छाँव तले, सतगुरु ने साथ को तारा -२
जहाँ सब सखियोंने प्रेम भावसे, श्यामको दिलसे पुकारा ।
वह है नवतनपुरी हमारा -२
यही ठौर है कृष्ण प्रणामियों का, यहीं से ही मुक्ति पाता ।
यहाँ आनेका सौभाग्य भी, किस्मतवालों को मिलता -२
नाम लेते हैं बनके जो 'अनुरागी' छूटे भवका फेरा ।
वह है नवतनपुरी हमारा -२ ***अनुरागी - वाराणसी***

श्रीमद्भागवत् कथा संपन्न

सुन्दरसाथजी, श्री ५ नवतनपुरी धाममें निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजकी स्मृतिमें प्रतिवर्ष भाद्र शुक्ला प्रतिपदासे पूर्णिमा पर्यन्त चतुदर्शीय श्रीमद्भागवत कथाका सुन्दर आयोजन होता है । इस वर्ष यह आयोजन ३० अगस्तसे १२ सितम्बर २०११ पर्यन्त था । इस वर्ष श्री ५ नवतनपुरी धामके युवा कथाकार श्री राजन शास्त्रीजीने अपनी मधुर शैली द्वारा श्रीमद्भागवत कथाका रसपान सुन्दर ढंगसे कराया । कथाका शुभारम्भ एवं समापन परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके शुभाशीर्वचन द्वारा हुआ ।

विकट घाटी प्रेम की

श्री भजनानन्द, जयपुर

कालिकालमें, आधुनिक कालमें प्रेम प्रकट होता है, शारीरिक स्वार्थवश, मानसिक स्वार्थवश, आर्थिक स्वार्थवश या भविष्यके स्वार्थवश । हम परमात्माके प्रति भी प्रेमका प्रदर्शन स्वार्थवश ही करते हैं। हम परमात्माके प्रेमका दिखावा प्रदर्शन किसी न किसी इच्छासे करते हैं । हमारी प्रार्थना, मांगसे भिन्न नहीं होती है । जबकि परमात्माके प्रेममें न राग है, न द्वेष है, न स्वार्थ है। वह तो बस परमात्माका प्रेम है। प्रेम रस है। प्रेम सागर है। अनन्त है । अथाह है । यह प्रेम रस शरीर, मन, आत्माकी सीढ़ियोंसे बहता हुआ परमात्माको प्राप्त होता है । शरीरसे परमात्माका प्रेम रस मानसिक तरंगोंद्वारा बहता है, इसलिये प्रेमको एक विकट घाटीके रूपमें प्रकट किया है । हमने परमात्माके प्रेमका बहुत सरल अर्थ लगा दिया है। केवल मात्र मन्दिर जाना, आरती करना, पूजा करना, प्रसाद लेना । लेकिन मन्दिरसे बाहर आते ही वही राग द्वेष, अहंकार, अप्रेमका व्यापार । प्रेमके रास्तेमें केवल एक ही रास्ता रह पाता है या तो परमात्मा या संसारका,

प्रेम गली है सांकड़ी, या में दो न समाय । (कबीरजी)
दोनों पाइये ना इस ठौर । (श्री प्राणनाथजी)

प्रेम-अप्रेम दो धाराएं :

हमारे शरीर अथवा मनमें प्रेम व अप्रेम दोनों प्रकारकी धाराएँ बहती हैं। जब हम अप्रेम(गुस्से)में होते हैं तो हमारे अन्तरकी प्रेमकी धारा कहाँ बह रही होती है हमें पता ही नहीं चलता । जब हम प्रेममें होते हैं तो सब कुछ प्रेममयी लगता है। अप्रेमका कहीं पता नहीं चलता । बड़ेसे बड़ा कलाकार भी प्रेम व अप्रेम दोनों साथ-साथ नहीं कर सकता । प्रेमको प्राप्त करने हेतु मनको प्रशिक्षित कर अप्रेमकी धारासे धीरे-धीरे हटाना होगा । लगातार

गुस्से(अप्रेम)के वातावरणमें रहनेवाला प्रेमकी कीमत नहीं जानता । लगातार प्रेमके रस वात्सल्यमें रहनेवाला केवल प्रेमको ही जानता है बस । अप्रेमको रास्ता न देना, अप्रेमके आ जाने पर स्वयंको संतुलित करना व अप्रेमसे अप्रभावित रहना । अप्रेमसे स्वयंका किसी प्रकारका रिश्ता कायम न करना अप्रेमको धीरे–धीरे समझाकर स्वयसे दूर करना ही अप्रेमकी धाराको प्रेमकी ओर मोड़ना है । अप्रेमको किसी प्रकारका स्थान न मिलने पर अप्रेम वहां टिक नहीं पाता है । प्रेम अपना स्थान ग्रहण कर लेता है।

प्रेम सुख नहीं है, रस है, सागर है,

प्रेम शारीरिक सुख नहीं है, मानसिक सुख नहीं है। हमने परमात्माका नाम लिया हमें सुख मिला, हमने सत्संग किया हमें सुख मिला। हम मन्दिर गये हमें सुख मिला क्या वह सुख हमें हर समय हर कालमें महसूस हो रहा है ? क्या बाहरके वातावरणका हम पर असर नहीं हो रहा है ? अध्ययन करें। प्रेम सुख व प्रेम दुःख दोनों आने जाने वाली चीज है। लेकिन प्रेम रस एक बार आ जाने पर कभी कम नहीं होता । वह अपने अन्तरमें स्वयं ही जगह बनाता है । बढ़ता जाता है ।

मोमन अन्तर उजले, खिन–खिन बढ़त उजास ।

प्रेम रस हर काल, हर स्थिति, हर स्थान पर रहता है । वह कम नहीं होता बढ़ता ही जाता है। जो कम हो जाये व प्रेम रस नहीं है, वह प्रेम सुख है । सांसारिक अवरोध, मानसिक अवरोध प्रेम रसके सामने बौने लगते हैं । प्रेम इतना महान हो जाता है कि अवरोध भी सामने आते हुए लज्जाते हैं । प्रेम रस महान सूक्ष्म, सरल व परमात्माका पर्यायवाची हो जाता है। प्रेम रसका रंग खूनकी तरह लाल न होकर 'प्रेम रंग' होता है जिसका प्रवाह पूर्ण शरीरमें, मानसिक तरंगोंद्वारा पूर्ण मनमें रहता है। प्रेम रससे पूर्ण व्यक्ति केवल प्रेमी भक्त रह जाता है और कुछ नहीं ।

क्या हम प्रेम पैदा कर सकते हैं ?

हमारे धार्मिक साहित्यमें परमात्मासे प्रेमको पति–पत्नीके प्रेमकी उष्मा प्रदान की है। पति–पत्नी भी पूर्णतः प्रेम तब ही कर पाते हैं जब दोनोंके

स्वयंका एक दूसरेमें समावेश हो जाता है तथा आपसमें किसी प्रकारकी कमियोंके लिये गिला उलाहना नहीं रहती है ।

प्रेममें केवल प्रेम होता है और कुछ नहीं । जो प्रेम प्रतिकार चाहता है वह प्रेम नहीं है स्वार्थ है । यदि हम परमात्माके प्रेमके बदलेमें मुक्ति या किसी प्रकारकी भी आशा करते हैं तो वह होगा स्वार्थ । ऐसा स्वार्थ भौतिक सुखोंकी कामनासे श्रेष्ठ होनेके कारण उपादेय माना गया है ।

सत्संग द्वारा, वाणी द्वारा, गुरुसंग द्वारा जब हमें इस संसारसे घृणा हो जाती हैं तब हम परमात्माके प्रेमकी और बढ़ना शुरु कर देते हैं । इसलिए कहा जाता है कि वाणी संग, गुरु संग, सत्संग करो । पता नहीं किस क्षण मनके अंतरमें यह भावना दृढ़ हो जाये । सबके अंतरमें सभी तरहकी भावनाएं बहती रहती है, केवल जरूरत है उसे वातावरण प्रदान करने की । हमारे अन्तर उस वातावरणसे शीघ्र ही प्रभावित हो जाते हैं । मरघट पर(श्मशान) जाने वाले सभी व्यक्ति कुछ क्षणोंके लिए वैरागी हो जाते हैं क्यों ? यदि जगह–जगह प्रभु कीर्तन टेप द्वारा, रेडियो द्वारा होगा तो वह प्रभावित करेगा ही ।

प्रेमको जागृत करने हेतु साकार पूजा की प्रेरणा प्रदान करें । साकार पूजासे मन प्रसन्न होता हैं । यह प्रसन्नता प्रेमका रास्ता साफ करती है । निराकार पूजा भी अन्ततः परमात्माको ही प्राप्त होती है लेकिन उसका रास्ता जरा कठिन है । प्रेमके रास्तेमें आपको स्वयं जाना है । आप किस प्रकार जावेंगे इसका निर्णय भी आपको ही लेना है । गुरु मार्गदर्शन कर सकता है, जाना तो आपको ही है ।

प्रेमके विपरीत वातावरण मिलते ही उसका प्रतिकार न करें । उसको परमात्माका प्रसाद ही माने, उसे ग्रहण करे । क्या पता उसमें भी आपकी प्रकृतिके अनुसार प्रेमका कोई रास्ता निकल आये । इसलिए विपरीत स्थितिका गहन अध्ययन करें ।

पाश्चातापकी अग्नि, विरहकी अग्नि, परमात्माके प्रेम बढ़ानेके लिये की गई प्रार्थना प्रेम रससे सरोबर होना ही है ।

थोड़ा सा प्रेम पैदा होते ही उसे स्वयंको कार्य करने दो, एक शक्तिके रूपमें शक्ति फिर स्वयं प्रेमको बढ़ा लेगी। आप उसे केवल योग्य वातावरण प्रदान करते जायें।

प्रेममें परमात्मासे क्षमा मांगते समय प्रार्थना करते करते गला अवरूद्ध हो जाता है। अन्तरका सारा अप्रेम अश्रु बन आंखोंसे बाहर निकल आता है, बाकी रह जाता है केवल प्रेम।

परमात्माके प्रेममें, ज्ञानमें, योगमें पूर्ण समर्पण ही एक मात्र रास्ता माना जा सकता है। पूर्ण समर्पणसे एक सूत भी कम नहीं।

प्रेमका प्रभाव :

जब संसारकी बातें असार नजर आने लगें तथा परमात्मा व परमात्मा प्रदत्त वाणीमें आनन्द रस आने लगे तब हम मानें कि हमें प्रेम रोग लग गया है।

तब इसक आया जानियों, जब इन रंग लाग्यो रस ॥

शरीरसे हृदय रुकनेकी यात्रा प्रेममय लगती है। संसारसे घृणा व द्वेष भी नहीं रहता। सारा संसार प्रेममय लगता है। प्रेमी भक्त किसीको शरीरसे मनसे दु:ख नहीं दे सकता, फूलोंकी चोट भी नहीं।

दु:ख न देऊँ फूल पांखड़ी

प्रेम सीमा रहित, स्वार्थ रहित, भेद रहित केवल प्रेम ही होता है। प्रेमसे आनन्दित प्रेमीका शरीर आलोकित, मन आलोकित व आत्मा पवित्र होती है तथा स्वयंकी मानसिक तरगों द्वारा सामने आये हुये अप्रेम प्रेममें परिवर्तित कर लेता है। यही कारण है कि प्रेमी भक्तके पास अप्रेम आते हुये घबड़ाता है, डरता है।

साहित्य सेवा : दार्जीलिंग परमधामवासी लीलाबाईकी पुण्य तिथिके उपलक्ष्यमें उनके परिजन(पुत्र, पुत्री, पोता एवं पौत्री)द्वारा श्री ५ नवतनपुरी धामके लिए थालभोग, आरती एवं श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु. १५१/ भेट अर्पण किया है।

आध्यात्मिक उन्नतिके लिए इलेक्ट्रोनिक्स माध्यमोंका उपयोग

धर्मप्राण सुन्दरसाथजी !

आप सभीको सूचित किया जाता है कि विज्ञान एवं टेक्नोलोजीके युगमें अध्यात्म ज्ञानके प्रचार प्रसारके लिए आधुनिक साधनोंका उपयोग कर प्रभावी कार्य करनेका आयोजन साकार रूप ले रहा है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि **प्रणामी ब्रोडकास्टिंग प्रा. लि.** द्वारा **'श्री कृष्ण'** टी.वी. चैनल हेतु भारत सरकारसे लाईसन्स प्राप्त किया जा रहा है। आशा हैं निकट भविष्यमें यह नई टी.वी. चैनल आपके टी.वी. के पर्देमें दिखने लगेगी।

दूसरा शुभ समाचार देते हुए भी हमें अपार हर्षका अनुभव हो रहा है कि अध्यात्म, नीति एवं व्यावहारिक शिक्षाके द्वारा भारतीय जीवन पद्धतिका ज्ञान विभिन्न टी.वी. चैनलोंके द्वारा प्रसारित करनेके लिए भारत सरकारके **LLP Act 2008** के अन्तर्गत **Pranami Education LLP** नामक संस्था रजिस्टर्ड हुई है। इसके द्वारा,

१. टी.वी. सिरीयल, टेली फिल्म, डक्यूमेन्टरी फिल्म, नीतिवर्द्धक शो, विभिन्न विषयोंपर अन्तर्वार्ता, विवेचन, समीक्षा आदिका निर्माण एवं आयोजन कर उनको विभिन्न टी.वी. चैनलों द्वारा प्रसारित करनेका महान कार्य आरम्भ हुआ है जिससे व्यक्तिको शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्वस्थता प्राप्त होगी और भारतीय जीवन शैलीको समझनेमें भी सरलता प्राप्त होगी साथ ही प्राचीन भारतीय विज्ञान योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, वास्तु, ज्योतिष आदिके मार्गदर्शनके द्वारा बच्चोंसे लेकर वृद्ध पर्यन्त सभीको सुखमय जीवन यापनकी कला सिखानेका भी उत्कृष्ट आयोजन है।

२. श्री कृष्ण प्रणामी धर्मका आध्यात्मिक चिन्तन - श्री तारतम सागर, वीतक, चर्चनी, विराट, सेवा पूजा आदिका प्रशिक्षण प्रसारित कर सामान्य व्यक्तिको क्षर, अक्षर एवं अक्षरातीतका रहस्य समझनेमें सुगमता

प्रदान की जा रही है ।

३. हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी आदि भाषाके माध्यमसे केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राज्य शिक्षा बोर्डका माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रमका सीधा प्रशिक्षण देनेका प्रस्ताव है जिससे १०वीं एवं १२वीं कक्षके विद्यार्थियोंको ट्यूशनमें जानेकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

ऊपर वर्णित कार्यक्रमोंके अतिरिक्त देश, काल एवं परिस्थितिके अनुरूप समाजोपयोगी कार्यक्रमोंका निर्माण एवं प्रसारण टी.वी., इन्टरनेट आदि इलेक्ट्रोनिक्स मिडियाके द्वारा देश विदेशमें किया जानेवाला है ।

उपर्युक्त महान उद्देश्योंकी परिपूर्तिमें सहयोगी बननेके लिए आप **Pranami Education LLP** में पूंजी निवेश कर उक्त कार्योंमें सहयोग पहुँचानेके साथ साथ आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

जिस प्रकार बैंक, पोष्ट ऑफिस आदिमें आप अपनी धनराशि डिपोजिट कर ब्याज प्राप्त करते हैं उसी प्रकार इस संस्थामें भी अपनी धनराशि डिपोजिट कर ब्याज प्राप्त कर सकते हैं । बैंक, पोष्ट ऑफिस आदि संस्थाएँ आपकी डिपोजिटका विनिमय कर मुनाफा कमाती हैं और अपना विस्तार करती हैं उस प्रकार यह संस्था अपने मुनाफेसे ऊपर वर्णित लोकोपयोगी कार्य करेगी । ऐसी संस्थामें अपना पूंजीनिवेश कर आप आर्थिक लाभके साथ साथ समाज सेवाका भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।

डिपोजिट योजना :

Pranami Education LLP में डिपोजिटकी योजनायें दो प्रकारकी बनायी है जिनके अन्तर्गत आप रु. २५००० या उनके गुणांकनमें अपनी धनराशि जमा कर सकते हैं ।

१.पहली योजना चार वर्षके लिए है जिसमें ५ प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज देनेका प्रावधान किया गया है । इसमें प्रथम दो वर्ष तक ब्याज नहीं दिया जायेगा और शेष दो वर्षमें १० प्रतिशत दरसे ब्याज दिया जाएगा । इस प्रकार चारों वर्षोंका कुल २० प्रतिशत ब्याज अन्तिम दो वर्षोंमें चुकाया जायेगा ।

२.दूसरी योजना आठ वर्षके लिए है जिसमें प्रतिवर्ष ६ प्रतिशत

दरसे ब्याज देनेका प्रावधान है। इसमें प्रथम ४ वर्ष ब्याज नहीं दिया जायेगा और शेष ४ वर्षमें प्रतिवर्ष १२ प्रतिशतके दरसे ब्याज दिया जायेगा। इस प्रकार आठ वर्षोंका कुल ब्याज ४८ प्रतिशत होगा जो अन्तिम ४ वर्षोंमें दिया जायेगा।

उपर्युक्त योजनाओंको स्पष्ट रूपसे अंकित कर आवेदन पत्र **Application Form** बनाये गये हैं। जिनको भी इन योजनाओंमें रुचि हो वे कृपया फर्म भर कर उसमें दिए गए निर्देशनोंके अनुसार अपनी धनराशिको बैंकमें जमा करवा सकते हैं। तदनन्तर संस्था थोड़े दिनोंमें आपको प्रमाण पत्र **(Deposit Certificate)** भेजेगी।

–संतसभा

श्री ५ नवतनपुरी धामसे
वीतक कथा करने वाले कथाकर

श्री प्रकाश आचार्य	**श्री ५ नवतनपुरी धाम (गुज०)**
पं श्री अमृतराज शर्मा	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर पुलचोक (नेपाल)**
पुजारी श्री यमनाथ शास्त्री	**श्रीकृष्ण प्रणामी मन्दिर, मुंबई (महा०)**
श्री चन्दन शास्त्री	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर पोरबन्दर/आमोदरा (गुज०)**
श्री श्यामसुन्दर ओझा	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, इलाहाबाद (यू.पी)**
श्री राजेन्द्र शास्त्री	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, अहमदाबाद/राजेन्द्रनगर (गुज०)**
श्री पुरुषोत्तम शास्त्री	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, सिनुग्रा (कच्छ)**
श्री तिलक गौतम	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, बलसाड (गुज०)**
श्री सुनील काफ्ले	**श्री निजानन्द गुरुकुल तथा हिम्मतनगर (गुज०)**
श्री बलराम प्रणामी	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, रियाडा (राज०)**
श्री नारायण शास्त्री	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, निकोडा/कानालुस (गुज०)**
श्री प्रेम प्रसाद घिमिरे	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, सिमरडा (गुज०)**
श्री सूरज घिमिरे	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, बावसर (गुज०)**
श्री रामेश्वर प्रणामी	**कंदुवा, सागर (म.प्र)**
श्री हरिप्रसाद तिमल्सिना	**श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, बुटवल (नेपाल)**
सुश्री भानु प्रणामी	**विभापर, जामनगर (गुज०)**
सुश्री गीता प्रणामी	**ठेबा, जामनगर (गुज०)**

पाकी रसोईकी सेवा

०१) धा.वा. साकरबेन तुलसीदास अनम	भूज
०२) श्री नारायणभाई मूलुभाई करंगीया	बाटवा
०३) धा.वा. मगनलाल नथ्थुभाई जोबनपुत्रा	राजकोट
०४) धा.वा. बावनजीभाई अर्जुनभाई भंडेरी	राजकोट
०५) धा.वा. शैलेशभाई लक्ष्मणभाई करंगीया	उपलेटा
०६) धा.वा. धीरूभाई कालाभाई वसोया	राजकोट
०७) धा.वा. कौशिकभाई चन्दुभाई वेकरिया	राजकोट
०८) धा.वा. पुरुषोत्तमभाई गोविन्दभाई पटेल परिवार	सलाल
०९) श्रीमती मधुबेन अमितकुमार हीरपरा	राजकोट
१०) श्री विलासभाई जोबनपुत्रा	सिकंदराबाद
११) श्री भाणजीभाई कानजीभाई पटोरीया	लावडीया
१२) शास्त्री उद्धव बजगाईं	काठमाडौं(नेपाल)
१३) श्री नरसिंहभाई बाबाभाई पटेल	देसासण
१४) श्री प्रभुदास हरजीभाई कोटेचा	गोण्डल
१५) श्री उदयशंकर श्रेष्ठ	काठमाडौं(नेपाल)
१६) श्री मणिलाल जीवाभाई पटेल	बावसर
१७) श्री चि.श्याम दिनेशभाई चकुभाई नारिया	कोंझा
१८) श्री रमेशभाई पीठडिया	राजकोट
१९) धा.वा. मोंघीबेन जेठाभाई सखीया	जामनगर
२०) धा.वा. नवीनचन्द्र मगनलाल भावसार	सेलवास
२१) धा.वा. प्रेमीलाबेन रमेशचन्द्र चोखावाला	वलसाड
२२) श्री आनन्दभाई जयन्तीभाई पटेल	जामनगर
२३) श्री मनसुखभाई राणाभाई पडालिया	राजकोट
२४) श्रीमती शारदाबेन छोटाभाई पटेल	टीम्बा
२५) श्री भीखुभाई नारणभाई राम	बामणवाडा(जूनागढ)
२६) श्री मगनभाई पुरुषोत्तमभाई राणपरीया	गुन्दासरा
२७) श्री जयन्तीभाई बाबुभाई राणपरीया	गुन्दासरा

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित चतुर्दश दिवसीय श्रीमद्भागवत कथाके प्रारम्भमें आशीर्वचन देते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं कथा करते हुए श्री राजन शास्त्रीजी ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित राधाष्टमीके मनमोहक दृश्य

श्री ५ नवतनपुरी धाम संचालित श्री प्रणामी विद्यापीठका दीक्षान्त समारोहमें प्रशिक्षार्थी : घनश्याम आचार्य, प्रमोद लुईटेल, प्रेम प्रसाद घिमिरे, कृष्ण प्रसाद तिमलसेना एवं हितेश प्रणामीको आशीर्वाद देते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री साथमें प्रशिक्षक पुजारी श्री यमनाथ शास्त्री ।

RNI.No. GUJ BIL /2006/18311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

नन्दोत्सवमें मटकी फोड़ते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री

खोजा गाममें औषधीय वनस्पतियोंका रोपण करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री

श्री ५ नवतनपुरी धाम एवं गुजरात आयुर्वेद युनिवर्सिटी जामनगरके संयुक्त तत्त्वावधानमें जामनगरके पार्श्ववर्ती ग्राम खोजाको मॉडल विलेज बनानेका संकल्प किया । उक्त संकल्पको मूर्तरूप देनेके लिए प्रथम चरणका उद्घाटन करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री, कुलपति प्रो.एम.एल.शर्मा एवं उपस्थित अन्य महानुभाव । इसी अवसर पर आयोजित सर्वरोग निदान केम्पमें दर्दियोंका निदान करते हुए वैद्यजन एवं दवाई वितरणके विविध दृश्य ।

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)